पर्यावरण एवं सामाजिक–आर्थिक विकास का नियोजन

विकास कुमार मिश्रा*

सामाजिक–आर्थिक विकास के प्रत्येक क्षेत्र में मानव के क्रियाकलापों द्वारा पर्यावरण में जो परिवर्तन हुए हैं उससे हमारे स्वास्थ्य भी प्रभावित हुए हैं। यह मान्यता सही नहीं है कि आर्थिक संवृद्धि मानव प्रगति का अकेला सूचक है। वर्तमान समय समाज के लोग नगरीकरण और औद्योगिकरण एवं ग्रामीण जीवन स्तर उच्च हो जिसमें समृद्धि लाने की आशा करते हैं, लेकिन नुकसानदेह तथ्य यह है कि इसमें भीड़–भाड़ और गन्दे जल, वायु प्रदूषण इत्यादि से अनेक सम्बन्धित रोग पैदा हो रहे हैं जिसमें अनेक संक्रामक रोग जैसे जलजन्य रोगों, दस्त, क्षयरोगों जैसे वायु जन्य रोगों में वृद्धि हो रही है। नगरीय क्षेत्रों में भारी यातायात के प्रवाह से अनेक बीमारियां जैसे सांस के रोगों में वृद्धि हो रही है। हरित क्रान्ति के दौरान खाद्य उत्पादन बढ़ाने वाले कीटनाशकों ने खेतिहर मजदूरों (कृषकों) को ओर अधिक पैदावार का उपयोग कर रहे समाज को प्रभावित किया है। विशेषकर एंटीबायोटिक दवाओं के कारण संक्रामक रोगों का इलाज भी सम्भव है। पर्यावरणीय स्वास्थ्य में जीवन की गुणवत्ता समेत मानव स्वास्थ्य के वे पक्ष शामिल हैं जो पर्यावरण में भौतिक, रासायनिक, जैविक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों से निर्धारित होता है। जलवायु में होने वाले विश्वव्यापी परिवर्तन का स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। विश्वव्यापी तापन के कारण अनेक देशों को जलवायु की अनिश्चित अवस्था के अनुकूलतम रूप से समायोजन करना होगा। जलवायु में परिवर्तन होने के कारण कुछ देशों में अधिक तूफान आ रहा है, कुछ क्षेत्रों में सूखा पड़ रहा है।

पर्यावरण सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं तथा आर्थिक, संवृद्धि के लिए आवश्यक है तथा उसे प्रभावित करता है। पर्यावरण ज्ञाता यह तर्क देते हैं कि आर्थिक संवृद्धि के कारण गैर नवीकरणीय संसाधनों के स्टाक में कमी आती है तथा पर्यावरण अवक्षरण होता है जो आर्थिक उत्पादन तथा सामाजिक जीवन के अस्तित्व तथा उनकी गुणवत्ता को गम्भीर रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक–आर्थिक संवृद्धि विशेष रूप से विकासशील देशों की सामाजिक–आर्थिक संवृद्धि के परिणामस्वरूप संसाधन उपयोग से मुक्त होगे जिन्हें पर्यावरणीय क्षरण को रोकने में प्रयोग में लाया जा सकता है जैसे सामाजिक–आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप जल की पूर्ति में वृद्धि हो सकती है तथा नगरों में भीड़–भाड़ मे कमी हो सकती है इस प्रकार की स्थिति को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि सामाजिक आर्थिक क्रियाओं के नियमन में सरकारी हस्तक्षेप हो तथा पर्यावरण के सन्दर्भ मे जनजागरूकता पैदा की जाये जिससे लोगों के अन्दर यह भावना जागृत हो कि पर्यावरण में अवनयन होने से विकास के स्वरूप में गिरावट आयेगी जिससे सामाजिक–आर्थिक विकास अवरूद्ध हो जायेगा।

उत्तम पर्यावरण निश्चित रूप से सार्वजनिक वस्तु है क्योंकि इससे एक सार्वजनिक वस्तु की आधारभूत विशेषताएं अपवर्जन रहित तथा प्रतिद्वन्द्विता हीनता इसमें विद्यमान है। समाज के सभी व्यक्ति उत्तम पर्यावरण का जिसको प्रकृति ने प्रदान किया है, शून्य लागत पर सामूहिक रूप से उपयोग करते हुए बिना किसी रूप में अपवर्जित हुए और बिना किसी दूसरे उपयोग के कमी के उपयोग कर सकते है। पर्यावरण में निजी सम्पत्ति के कोई गुण नहीं विद्यमान है लेकिन पर्यावरण के अधिक तथा अवांछित रूप में शोषण के कारण उत्तम पर्यावरण दुर्लभ होता जा रहा है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव समाज के लोगों के जीवन पर पड़ता है इसलिए अच्छे पर्यावरण या गुणवत्तायुक्त पर्यावरण को वर्तमान स्तर पर बनाये रखने के लिए लोग जिससे समाज के कल्याण में वृद्धि हो सके, लोग अधिक कीमत देने के लिए तैयार रहते हैं लेकिन उत्तम पर्यावरण एक सार्वजनिक वस्तु है जिसका उपयोग समाज के सभी वर्ग के लोग गरीब हो या अमीर समान रूप से करते हैं।

प्राकृतिक व मानवकृत आपदायें, विश्व जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, भूक्षरण, पेयजल संकट, हिमनदों का पिघलना, समुद्री जल स्तर में वृद्धि, जैव विविधता का ह्रास, ओजोन परत का ह्रास इत्यादि अनेक विश्वस्तरीय व स्थानीय समस्या के कारण सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों तथा नियोजनकर्ताओं का ध्यान आर्कषित हुआ। इस प्रकार की अनेक समस्याओं के समाधान हेतु न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व स्तर पर पर्यावरण विकास, संरक्षण, पर्यावरण प्रबन्ध इत्यादि कार्य सामूहिक प्रयास से किये जाने लगे। जिसके परिणामस्वरूप शुद्ध पर्यावरण व सुरक्षित पर्यावरण की अवधारणा प्रस्फुटित हुई।

समाज के प्रत्येक प्राणी को स्वच्छ एवं अनुकूल पर्यावरण में रहने का अधिकार है। अतः पर्यावरण के भौतिक एवं जैविक तत्वों के मध्य होने वाले अन्तक्रिया को समझने एवं इससे अर्जित ज्ञान को पर्यावरणीय प्रबन्ध के लिए प्रयोग की आवश्यकता है। तीव्र आर्थिक संवृद्धि से बहुत अधिक तथा गम्भीर रूप में पर्यावरण का क्षरण होता है और यह क्षरण अपोषणीय हो सकता है। क्योंकि पर्यावरण अधिक संवृद्धि को बनाये रखने में बहुत लम्बी अवधि तक मददगार नहीं

***वरिष्ठ शोध छात्र, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।**

हो सकता है। यदि उचित नीतियाँ नहीं अपनायी गयी तो भावी पीढ़ी तक मानव जीवन को एक निश्चित निर्वाह के स्तर पर बनाये रखने के लिए आवश्यक पारिस्थितिकीय कायम नहीं रह सकेगी। पोषणीय विकास वह स्तर है जो वर्तमान की आवश्यकताओं को, भावी पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की क्षमता से, समझौता के बगैर सन्तुष्ट करता हैं यानि संक्षेप में कहा जा सकता है कि पोषणीय विकास परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसमें संसाधनों का दोहन निवेश की दिशा, तकनीकि विकास की दिशा निर्देशन और संस्थागत परिवर्तन सभी सुसंगत रूप में है और मानवीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को सन्तुष्ट करने हेतु विद्यमान व भावी दोनों सम्भावनाओं की वृद्धि होती है। इसलिए प्राकृतिक पूंजी को पीढ़ीदर पीढ़ी बनाये रखना आवश्यक होता है। अविवेकपूर्ण पर्यावरणीय क्षति के कारण प्राकृतिक पूंजी परिसम्पत्ति में विसर्जन पर्यावरण में प्राकृतिक पुनर्जनन प्रक्रिया पर हावी रहता है। पृथ्वी पर पहले से ही दबाव बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास से लेकर विभिन्न स्तर चुनौतियाँ विकराल होती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में कुछ पहलुओं पर विचार करना होगा। एक तो मांग पूरा करने के लिए खाद्य उत्पादों की मात्रा और गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए उनके उत्पादन में उसका आकर्षण बढ़ाना होगा। इसके अतिरिक्त एक ऐसा तन्त्र विकसित करना होगा जिससे जल की मात्रा और गुणवत्ता मृदा स्वास्थ्य एवं जैव विविधता बेहतर बने। हमें जागरूकता का सही आकलन कर समुचित उत्पादन करने की रणनीति इस तरह बनानी होगी जिसमें प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत अधिक दबाव न पड़े। हरित अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में हमें संसाधनों का कुशलता से प्रबन्धन करना होगा। क्लोमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर को अपनाकर इसका समाधान किया जा सकता है।

नियोजन जो किया जाता है वह विकास की प्रक्रिया के रूप में दो तरह से प्रथम रूप में मानव समाज के संर्वागीण विकास की प्राप्ति दूसरा सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दूर करना। प्रक्रिया द्वारा सभी प्रकार के संसाधनों का विदोहन और संसाधनों का उपयोग होता है।

सामाजिक–आर्थिक विकास रूप आर्थिक संवृद्धि पर आधारित विकास के पर्यावरण सम्बन्धी परिणामों से उन पर गम्भीर प्रभाव पड़ रहे हैं। विकास के इस रूप ने सामाजिक जीवन की गुणवत्ता को नहीं बढ़ाया क्योंकि पर्यावरण की दशायें बिगड़ने लगी। महात्मा गांधी ने पर्यावरण के ठोस प्रबन्धन के आधार पर एक उत्तम समुदाय की कल्पना की थी।

आधुनिकता के नाम पर आज मनुष्य प्रकृति का स्वामी बनने के प्रयास में लगा हुआ है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु क्रूरता से वनों को नष्ट कर दिन–प्रतिदिन नई–नई इमारतें, सड़कें, भवन, कारखाने इत्यादि बनाता जा रहा है,

जिससे पर्यावरण में असंतुलन का स्तर बढ़ता जा रहा है जिसे हम आज 'ग्लोबल वार्मिंग' के नाम से जानते हैं। जनसंख्या में निरंतर असाधारण वृद्धि एवं औद्योगिक व कृषि विकास के कारण अनेक तरह की पर्यावरणीय समस्याओं ने जन्म लिया है।

औद्योगिक उत्पादन बढ़ने के साथ ग्रीन टेक्नोलॉजी पर भी जोर दिया जा रहा है, जिससे पर्यावरण के विकास को बढ़ावा मिला है। वर्तमान में यह आवश्यक हो गया है कि मनुष्य का सामाजिक–आर्थिक उपलब्धि के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी ध्यान देना चाहिए। मनुष्य के अंदर यह अवधारणा होनी चाहिए कि बिना पर्यावरण को क्षति पहुॅचाए सामाजिक आर्थिक उन्नति को प्राप्त करना चाहिए, जिससे विकास की गति में भी अवरोध न हो और प्राकृतिक संतुलन भी बनाया जा सके। यह तभी संभव हो पाएगा जब मनुष्य स्वयं इसके प्रति जागरूक हो और पर्यावरण की महत्ता को समझे।

पर्यावरणीय समस्याओं के अनेक कारणों ने जीवनयापन की निर्भरता के अन्य आयामों को उजागर कर दिया है, जिससे समस्त नगारिकों को जीवनयापन हेतु सुविधाऍं उपलब्ध कराई जा सकें। पर्यावरण जीव–जंतुओं, मनुष्य आदि को प्रभावित करता आया है। पर्यावरण में असंतुलन होने पर यह विकराल रूप धारण कर लेता है जैसे गंभीर बीमारियां, प्राकृतिक आपदाएं (बाढ़, सूखा, भूकंप, सुनामी, गर्म हवा, ठंडी हवा, भूस्खलन, भू–क्षरण, मरूस्थलीकरण इत्यादि) यह ओजोन परत को भी प्रभावित कर रहा है, जिससे सामान्य प्राणी के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न हो रहा है। वर्तमान में यह सामाजिक समस्या का रूप ले रहा है।

तीव्र औद्योगीकरण के कारण प्रतिदिन नई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हो रही है जिनके लिए वनों को तीव्र गति से नष्ट किया जा रहा है। इससे कहीं बाढ़ एवं कहीं अकाल की समस्या सामान्य हो गई है। परिणामस्वरूप हजारों की संख्या में लोग शरणार्थी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

पारंपरिक ऊर्जा के साधन कोयला, पेट्रोल, अन्य जीवाश्म, ईधन आदि के भंडार निरंतर कम होते जा रहे हैं।

प्राकृतिक आपदाओं तथा बहुउद्देशीय बांध–निर्माण योजनाओं के कारण पुनर्वास की समस्या महत्वपूर्ण होती है। इसमें व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर विस्थापित किया जाता है जिससे उनकी संस्कृति और जीवनशैली में परिवर्तन हो जाता है।

गरम होती धरती, पर्यावरण को निरंतर प्रभावित कर रही है, जिससे समुद्र व वनों पर जीवन बसर करने वाली विश्व की अधिकांश जनसंख्या को अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ रहा है, इससे उनके कार्यो में शिथिलता आ गई है। पर्यावरण में असंतुलन के कारण नहरों के जल में लवण की मात्रा में वृद्धि हो रही

है जिससे धरती बंजर होकर अनुपयोगी होती जा रही है, जिसके कारण कृषकों को अपने मूल निवास स्थान से पलायन करना पड़ रहा है।

औद्योगिक देशों में अम्लीय वर्षा सबसे बड़ी समस्या है। अम्लीय वर्षा या तेजाबी वर्षा वायु प्रदूषण का एक विनाशकारी प्रभाव है। पर्यावरण पर अम्लीय वर्षा के प्रभाव अत्यंत घातक व दूरगामी होते हैं। इसका जल मनुष्य, जंतु, वनस्पति व मृदा के लिए हानिकारक होता है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण वायुमंडल में ओजोन गैस की कमी हो जाती है। ओजोन परत में क्षरण पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरे की घंटी है। ओजोन के क्षरण से भयावह परिणाम पृथ्वीवासियों को भुगतने होंगे। सूर्य की पराबैगनी किरणों के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है, जिससे वनस्पति व जीव जंतु झुलस जाते हैं। आंखों को नुकसान तथा त्वचा के कैंसर की संभावना पढ़ रही है। जन सामान्य में ओजोन संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष 16 सितम्बर को ओजोन परत संरक्षण दिवस मनाया जाता है।

ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि के कारण वातावरण में अनेक दुष्प्रभावों की आशंका है। पर्यावरण में असंतुलन के कारण ऋतु–चक्र बदलता रहता है। इसका सर्वाधिक प्रभाव कृषि पर पड़ सकता है। इस हेतु मानसून संरचनाओं का नव–निर्माण कर कृषि की प्रणालियों में परिवर्तन किया जा सकता है।

पर्यावरण मानव को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। वर्तमान समय में मानव समाज के वैज्ञानिक प्रयोगों के उत्पादों से मानव स्वयं को अलग रखने की कल्पना भी नहीं कर सकता, लेकिन वैज्ञानिक प्रयोगों से पर्यावरण पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों की भी अनदेखी नहीं कर सकते, क्योंकि मानव जीवन के अस्तित्व को बनाए रखना आवश्यक है। सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही साथ मनुष्य को स्वयं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूक होना चाहिए। इसके लिए स्कूलों और महाविद्यालयों में भी पर्यावरण शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है जिससे बच्चे पर्यावरण के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकें।

सन्दर्भः

1. दूबे, के0एन0 1980: रिजनल डिस्पैरिटी इन लेवलस ऑफ सोसियो इकोनामिक डेवलपमेंट, इन उ0प्र0 अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पंजाब वि0वि0 चण्डीगढ़।
2. गोसल, जेएम0 एण्ड जी, कृष्णः 1977: नेशनल डिस्पैरिटिज इन लेवल्स ऑफ सोशियो इकोनामिक डेवलपमेन्ट इन पंजाब ऑफ जाग्राफी पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, पृ0–5
3. जी0एम0 मेयरः लीडिंग इन इकोनामिक डेवलपमेंट, पृ0–267

4. कृष्ण, जी (1980): डेवलपमेंट, सोशल डेवलपमेंट एण्ड जाग्राफी इन मण्डल आर0बी0 एण्ड सिन्हा, वी0एन0पी0 इट्स रिसेन्ट ट्रेन्डम एण्ड कानसेप्ट्स इन जाग्रफी कानसेप्ट पब्लिशिंग क0 बम्बई, पृ0–161
5. मार्शल, टी0एच0: सोशियालोजी एण्ड द क्रास रोडस एण्ड अदर एसेज लन्दन, 1965 पृ0–133.
6. मिश्रा, आर0पी0 (ए0डी0) : लोकल लेवल प्लानिंग एण्ड डेवलपमेंट, स्टर्लिंग पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ0–3
7. श्रीनिवास, एम0एन0–सोशियल स्टक्चर।